AGRASEN CIVIL SERVICES ACADEMY

Where tradition meets innovation

ACSA

22 से 30 जून 2023

साप्ताहिक करेंट अफेयर्स

For

UPSC / RPSC EXAMS

and All Other Competitive

- खनिज सुरक्षा साझेदारी
- हेलिओपोलिस स्मारक
- जोहा चावल के पोषक तत्व गुण
- तकनीकी में बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान सुधार
- भारत-मिस्र रणनीतिक साझेदारी
- Google की 'परप्रिेक्ष्य' खोज
- राज्यों को विशेष सहायता पूंजी निवेश 2023-24' योजना

A UNIT OF
AGRAWAL PG COLLEGE
Affiliated to University of Rajasthan | Managed by Shri Agrawal Shiksha Samiti
(A Co-Educational College)

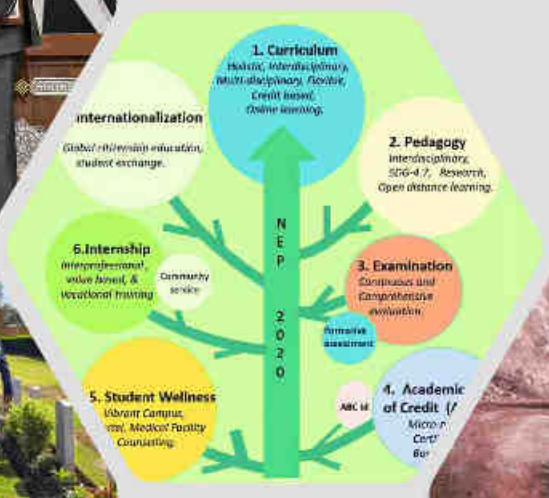

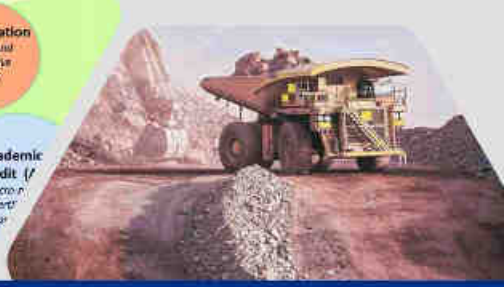

+91-8824395504, +91-8290664069
www.acsajaipur.com
Agrasen Katla, Maharaja Agrasen Marg, Agra Road, Jaipur - 302003

Current Affairs 22 June to 30 june

- खनिज सुरक्षा साझेदारी
- हेलिओपोलिस स्मारक
- यूएवी निर्यात नीति का उदारीकरण जोहा चावल के पोषक तत्व गुण
- जोहा चावल के पोषक तत्व गुण
- उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस
- तकनीकी में बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान सुधार
- 2023 आईएमडी विश्व प्रतिस्पर्धात्मकता रैंकिंग
- भारत-मिस्र रणनीतिक साझेदारी
- मधुमक्खी कालोनियों में उच्च मृत्यु दर
- कोयला आधारित विद्युत संयंत्रों की अनुपालन स्थिति
- प्रदूषकों को भुगतान कैसे करें: वैश्विक इक्विटी का समर्थन करने के लिए जलवायु वित्त
- विश्व औषधि रिपोर्ट 2023
- देश में नवीकरणीय एच-1बी वीजा
- Google की 'परिप्रेक्ष्य' खोज

खनिज सुरक्षा साझेदारी

खनिज सुरक्षा साझेदारी (एमएसपी) के रूप में जानी जाने वाली वैश्विक पहल, जिसे महत्वपूर्ण खनिज गठबंधन भी कहा जाता है, की घोषणा जून 2022 में की गई थी। इस साझेदारी का प्राथमिक लक्ष्य भाग लेने वाले देशों की अर्थव्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण खनिजों की स्थिर आपूर्ति की उपलब्धता सुनिश्चित करना है। वैश्विक महत्वपूर्ण खनिज बाजार में चीन के प्रभुत्व को कम करते हुए।

केंद्रित खनिज: कोबाल्ट, निकल, लिथियम और दुर्लभ पृथ्वी खनिज

एमएसपी कोबाल्ट, निकल, लिथियम और 17 "दुर्लभ पृथ्वी" खनिजों सहित महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखलाओं पर जोर देता है। ये खनिज उन्नत प्रौद्योगिकियों जैसे मोबाइल फोन, इलेक्ट्रिक वाहन, सौर पैनल और रक्षा अनुप्रयोगों के निर्माण के लिए आवश्यक हैं।

भारत की स्थिति: वर्तमान सदस्य नहीं

वर्तमान में, भारत खनिज सुरक्षा साझेदारी का हिस्सा नहीं है। हालाँकि, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की संयुक्त राज्य अमेरिका यात्रा के दौरान, महत्वपूर्ण खनिजों पर इस वैश्विक गठबंधन में भारत के संभावित प्रवेश के संबंध में चर्चा होने की उम्मीद है।

भाग लेने वाले देश: एक वैश्विक प्रयास

खनिज सुरक्षा साझेदारी में जापान, ऑस्ट्रेलिया, फिनलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा, कोरिया गणराज्य, फ्रांस, स्वीडन और यूरोपीय संघ सहित कई प्रमुख देश शामिल हैं। साथ मिलकर, इन देशों का लक्ष्य महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करना और एक प्रमुख खिलाड़ी पर निर्भरता कम करना है।

प्रसंस्करण में चीन का प्रभुत्व: एक प्रमुख चुनौती

महत्वपूर्ण खनिजों के प्रसंस्करण के मामले में चीन वर्तमान में प्रमुख स्थान रखता है। यह किसी एक देश पर निर्भरता कम करने के लिए विविधीकरण और वैकल्पिक स्रोतों के विकास की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है।

दुर्लभ पृथ्वी खनिज: उच्च तकनीक उद्योगों के लिए आवश्यक घटक

दुर्लभ पृथ्वी खनिज, जिसमें स्कैंडियम, येट्रियम और लैंथेनाइड्स जैसे तत्व शामिल हैं, विभिन्न उच्च-तकनीकी अनुप्रयोगों के उत्पादन में महत्वपूर्ण घटक हैं। ये खनिज सेलुलर टेलीफोन, फ्लैट-स्क्रीन मॉनिटर, टेलीविजन और इलेक्ट्रिक वाहनों जैसे उपकरणों के कामकाज के लिए महत्वपूर्ण हैं।

भारत-ऑस्ट्रेलिया महत्वपूर्ण खनिज निवेश साझेदारी

महत्वपूर्ण खनिज आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने के लिए, भारत और ऑस्ट्रेलिया ने भारत-ऑस्ट्रेलिया क्रिटिकल मिनरल्स निवेश साझेदारी की स्थापना की है। इस साझेदारी का उद्देश्य महत्वपूर्ण खनिजों में संसाधन और विशेषज्ञता प्रदान करके भारत के अंतरिक्ष और रक्षा उद्योगों के साथ-साथ इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण का समर्थन करना है।

सुरक्षित और टिकाऊ खनिज आपूर्ति की ओर आगे बढ़ना

जैसे-जैसे भारत स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों और इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर बदलाव के दौर से गुजर रहा है, महत्वपूर्ण खनिजों की विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित करना अनिवार्य हो गया है। वैश्विक पहलों में सक्रिय रूप से भाग लेने और रणनीतिक साझेदारी बनाकर, भारत दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के असमान वितरण से उत्पन्न चुनौतियों का समाधान कर सकता है और अपने बढ़ते उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण **खनिजों की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित कर सकता है।**

हेलिओपोलिस स्मारक

मिस्र के काहिरा में स्थित, हेलियोपोलिस (पोर्ट टेवफिक) स्मारक प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मिस्र और फिलिस्तीन में लड़ने वाले भारतीय सैनिकों की वीरता और बलिदान को एक श्रद्धांजलि के रूप में खड़ा है।

हेलियोपोलिस मेमोरियल लगभग 3,727 भारतीय सैनिकों के नाम पर खड़ा है, जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मिस्र और फिलिस्तीन के थिएटरों में बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी। यह शांति के लिए उनकी बहादुरी और समर्पण के प्रमाण के रूप में कार्य करता है।

1926 में मूल स्मारक का अनावरण

मूल पोर्ट टेवफिक स्मारक, जिसका अनावरण 1926 में किया गया था, स्वेज नहर के प्रवेश द्वार पर गर्व से खड़ा था। हालाँकि, 1967 के इज़राइली-मिस्र युद्ध के कारण, पीछे हटने वाले मिस्र के सैनिकों द्वारा स्मारक को नष्ट कर दिया गया था। इसके स्थान पर, 1980 में हेलियोपोलिस कॉमनवेल्थ वॉर ग्रेव्स कब्रिस्तान में एक नया स्मारक बनाया गया, जिससे यह सुनिश्चित किया गया कि शहीद हुए भारतीय सैनिकों के नाम कभी नहीं भुलाए जाएंगे।

भारतीय सैनिकों की भूमिका: स्वेज़ नहर की सुरक्षा और भी बहुत कुछ

भारतीय सैनिकों ने प्रथम विश्व युद्ध के पश्चिम एशियाई अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मिस्र में स्वेज नहर जैसे रणनीतिक स्थानों को सुरक्षित किया और फिलिस्तीन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विशेष रूप से, भारतीय घुड़सवार सेना ने हाइफ़ा की प्रसिद्ध लड़ाई में भाग लिया था, जो एक ऐतिहासिक क्षण था जिसे नई दिल्ली में एक युद्ध स्मारक में याद किया गया।

42वीं देवली रेजिमेंट की स्मृति में

हेलियोपोलिस स्मारक में सूचीबद्ध रेजिमेंटों में, 42वीं देवली रेजिमेंट युद्ध प्रयासों में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए एक विशेष स्थान रखती है। अन्य भारतीय रेजिमेंटों और राज्य बलों के साथ, उन्होंने युद्ध के विभिन्न थिएटरों में कार्रवाई देखी, जिसने इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी।

रिसालदार बदलू सिंह का साहस

एक नाम जो हेलियोपोलिस मेमोरियल में चमकता है वह रिसालदार बदलू सिंह का है। इस साहसी भारतीय सैनिक को मरणोपरांत सर्वोच्च ब्रिटिश युद्धकालीन वीरता पुरस्कार विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया। उन्होंने दुश्मन की एक मजबूत स्थिति पर हमले के दौरान बहादुरी और आत्म-बलिदान का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया, जिसे कभी नहीं भुलाया जाएगा।

सिपाही नज़र सिंह और सिपाही गुरचरण को याद करते हुए

51वें सिख (फ्रंटियर फोर्स) के सिपाही नज़र सिंह और देहरा, कांगड़ा, पंजाब के सिपाही गुरचरण, युद्ध स्मारक पर याद किए जाने वाले बहादुर सैनिकों में से हैं। पत्थरों पर उकेरे गए उनके नाम, उनके समर्पण और बलिदान की मार्मिक याद दिलाते हैं।

विरासत का संरक्षण

हेलियोपोलिस (पोर्ट टेवफिक) स्मारक प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों द्वारा किए गए बलिदानों की एक गंभीर याद के रूप में खड़ा है। यह उनकी स्मृति को संरक्षित करने और उनकी असाधारण बहादुरी को श्रद्धांजलि देने का काम करता है।

यूएवी निर्यात नीति का उदारीकरण

विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने हाल ही में भारत से ड्रोन/यूएवी के निर्यात को नियंत्रित करने वाली नीति में महत्वपूर्ण बदलाव लागू किए हैं। नागरिक उपयोग के लिए उच्च तकनीक वाली वस्तुओं के निर्यात को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, डीजीएफटी ने ड्रोन निर्यात के आसपास के नियमों को सरल और उदार बनाया है।

पहले, ड्रोन SCOMET सूची की प्रतिबंधात्मक श्रेणी 5B के अंतर्गत आते थे, जो नागरिक और सैन्य दोनों अनुप्रयोगों में दोहरे उपयोग की क्षमता वाली वस्तुओं को नियंत्रित करता है। निर्यातकों को SCOMET लाइसेंस प्राप्त करने की आवश्यकता थी, जिसने विशेष रूप से केवल नागरिक उपयोग के लिए सीमित क्षमताओं वाले ड्रोन के लिए चुनौतियाँ पेश कीं।

ड्रोन के निर्यात के लिए सामान्य प्राधिकरण (जीएईडी) का परिचय

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, डीजीएफटी ने ड्रोन के निर्यात के लिए सामान्य प्राधिकरण (जीएईडी) की शुरुआत की। विशिष्ट मानदंडों को पूरा करने वाले ड्रोन अब इस प्राधिकरण के लिए पात्र हैं, जिससे निर्यात प्रक्रिया सरल हो गई है। मानदंड में 25 किमी के बराबर या उससे कम की सीमा, 25 किलोग्राम से अधिक का पेलोड (सॉफ्टवेयर और प्रौद्योगिकी को छोड़कर) और नागरिक अंत-उपयोग के लिए एक स्पष्ट उद्देश्य शामिल है।

ड्रोन उद्योग के लिए लाभ

नीति परिवर्तन से भारत में ड्रोन उद्योग को महत्वपूर्ण लाभ मिलने की उम्मीद है। प्रत्येक निर्यात शिपमेंट के लिए SCOMET लाइसेंस की आवश्यकता को समाप्त करके, अनुपालन आवश्यकताओं को कम किया जाता है, जिससे निर्यातकों के लिए प्रक्रिया सरल हो जाती है। इस बदलाव का उद्देश्य भारत को ड्रोन के लिए वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना, उद्योग के भीतर नवाचार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना है।

वैधता और प्रक्रियात्मक विवरण

GAED प्राधिकरण 3 वर्षों के लिए वैध एक बार का सामान्य लाइसेंस प्रदान करता है। इसका मतलब यह है कि GAED प्राधिकरण वाले ड्रोन निर्माताओं और निर्यातकों को अब 3 साल की वैधता अवधि के भीतर प्रत्येक निर्यात शिपमेंट के लिए SCOMET लाइसेंस के लिए आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है। जीएईडी के लिए विस्तृत प्रक्रियाएं और दिशानिर्देश डीजीएफटी वेबसाइट पर पाए जा सकते हैं, विशेष रूप से डीजीएफटी सार्वजनिक सूचना संख्या 19 में।

जोहा चावल के पोषक तत्व गुण

जोहा चावल, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में खेती की जाने वाली एक किस्म है, जिसने अपनी विशिष्ट सुगंध और उल्लेखनीय स्वाद के लिए ध्यान आकर्षित किया है। अपनी संवेदी अपील के अलावा, जोहा चावल पारंपरिक रूप से स्वास्थ्य लाभों से जुड़ा हुआ है, जिसमें मधुमेह और हृदय रोगों की कम घटना भी शामिल है। हाल के वर्षों में, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी (आईएएसएसटी) के वैज्ञानिकों ने इस अद्वितीय अनाज के न्यूट्रास्यूटिकल गुणों का पता लगाने के लिए शोध किया है।

आईएएसएसटी के शोधकर्ताओं ने जोहा चावल के न्यूट्रास्युटिकल गुणों को उजागर करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। अपने अध्ययन के माध्यम से, उन्होंने दो आवश्यक फैटी एसिड की पहचान की: लिनोलिक एसिड (ओमेगा -6) और लिनोलेनिक एसिड (ओमेगा -3)। ये फैटी एसिड, जो मानव शरीर द्वारा निर्मित नहीं होते हैं, विभिन्न शारीरिक स्थितियों को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से, ओमेगा-3 फैटी एसिड को मधुमेह, हृदय रोग और कैंसर जैसी चयापचय संबंधी बीमारियों की रोकथाम से जोड़ा गया है।

संतुलित अनुपात और पेटेंट चावल की भूसी का तेल

वैज्ञानिकों ने पाया कि सुगंधित जोहा चावल व्यापक रूप से उपभोग की जाने वाली गैर-सुगंधित किस्म की तुलना में ओमेगा -6 से ओमेगा -3 आवश्यक फैटी एसिड का अधिक संतुलित अनुपात प्रदर्शित करता है। इस खोज से पता चलता है कि सुगंधित किस्म बेहतर पोषण लाभ प्रदान कर सकती है। इसके आधार पर, वैज्ञानिकों ने पेटेंट चावल की भूसी का तेल बनाने के लिए जोहा चावल का उपयोग किया, जिसने मधुमेह के प्रबंधन में प्रभावकारिता प्रदर्शित की है।

एंटीऑक्सीडेंट और बायोएक्टिव यौगिक

जोहा चावल न केवल आवश्यक फैटी एसिड से समृद्ध है बल्कि इसमें कई लाभकारी यौगिक भी शामिल हैं। इसमें एंटीऑक्सिडेंट, फ्लेवोनोइड और फेनोलिक्स होते हैं, जो इसके संभावित स्वास्थ्य लाभों में योगदान करते हैं। जोहा चावल में मौजूद पहचाने गए बायोएक्टिव यौगिकों में ओरिज़ानॉल, फेरुलिक एसिड, टोकोट्रिएनोल, कैफिक एसिड, कैटेचिक एसिड, गैलिक एसिड और ट्राइसिन शामिल हैं। ये यौगिक एंटीऑक्सीडेंट, हाइपोग्लाइसेमिक और कार्डियो-सुरक्षात्मक प्रभावों से जुड़े हुए हैं।

उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस

उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस एक महत्वपूर्ण अवसर है जो भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की उपलब्धियों और क्षमता पर प्रकाश डालता है। इस वर्ष, यह कार्यक्रम 27 जून को मनाया जाएगा, जिसमें सरकार और एमएसएमई क्षेत्र के प्रमुख हितधारक एक साथ आएंगे।इस कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री नारायण राणे की उपस्थिति होगी, जो मुख्य अतिथि के रूप में काम करेंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय राज्य मंत्री भानु प्रताप सिंह वर्मा भी उपस्थित रहेंगे। उनकी भागीदारी देश में एमएसएमई की वृद्धि और विकास के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

रोमांचक पहल शुरू की जाएंगी

उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस एमएसएमई को सशक्त बनाने और उत्थान करने के उद्देश्य से कई उल्लेखनीय पहलों की शुरुआत का गवाह बनेगा। इनमें चैंपियंस 2.0 पोर्टल का अनावरण शामिल है, एक ऐसा मंच जो एमएसएमई को मूल्यवान समर्थन और संसाधन प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त, क्लस्टर परियोजनाओं और प्रौद्योगिकी केंद्रों की जियो-टैगिंग के लिए एक मोबाइल ऐप पेश किया जाएगा, जिससे इन पहलों के प्रभावी प्रबंधन और निगरानी की सुविधा मिलेगी। इसके अलावा, यह कार्यक्रम एमएसएमई आइडिया हैकथॉन 3.0 के लॉन्च का प्रतीक होगा, जो एक ऐसा मंच है जो महिला उद्यमियों के बीच नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है।

मान्यता और समर्थन

यह आयोजन एमएसएमई की उपलब्धियों को स्वीकार करने के लिए एक मंच के रूप में भी काम करेगा। एमएसएमई आइडिया हैकथॉन 2.0 के परिणाम घोषित किए जाएंगे, जिसमें प्रतिभागियों द्वारा उत्पन्न रचनात्मक और नवीन विचारों को प्रदर्शित किया जाएगा। इसके अलावा, गोल्ड और सिल्वर जेडईडी-प्रमाणित एमएसएमई को सम्मानित करने के लिए प्रमाणपत्र वितरण समारोह आयोजित किए जाएंगे। एमएसएमई सस्टेनेबल (जेडईडी) प्रमाणन, जो शून्य दोष, शून्य प्रभाव प्रथाओं को बढ़ावा देता है, का उद्देश्य एमएसएमई संचालन की गुणवत्ता और दक्षता को बढ़ाना है।

आर्थिक विकास को बढ़ावा देना

एमएसएमई के विकास को और बढ़ावा देने के लिए, इस कार्यक्रम में 400 करोड़ रुपये की मार्जिन मनी सब्सिडी का डिजिटल हस्तांतरण होगा। यह सब्सिडी, प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (पीएमईजीपी) का एक हिस्सा, स्थानीय रोजगार सृजन में योगदान देगी और इच्छुक उद्यमियों को सशक्त बनाएगी।

एक जीवंत एमएसएमई पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण

एमएसएमई के लिए सरकार की पहल उनकी सफलता के लिए एक सक्षम वातावरण बनाने पर केंद्रित है। इन पहलों का उद्देश्य समग्र व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार करना, नवाचार को बढ़ावा देना, क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय असमानताओं को कम करना है। एमएसएमई को समर्थन देकर, सरकार आर्थिक विकास को बढ़ावा देना और उनके सतत विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाना चाहती है।

महत्व का एक स्थान

उद्यमी भारत-एमएसएमई दिवस कार्यक्रम नई दिल्ली के विज्ञान भवन में होगा, जो एक प्रतिष्ठित स्थल है जो एमएसएमई क्षेत्र की वृद्धि और प्रगति के लिए सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

तकनीकी में बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान सुधार

विश्व बैंक ने हाल ही में देश में तकनीकी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के उद्देश्य से भारत को 255.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर के बड़े ऋण को मंजूरी दे दी है। यह महत्वाकांक्षी परियोजना सरकार द्वारा संचालित तकनीकी संस्थानों में अनुसंधान, उद्यमिता, नवाचार और शासन सुधार पर ध्यान केंद्रित करके महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए तैयार है।

तकनीकी शिक्षा परियोजना में बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान सुधार से पूरे भारत में लगभग 275 सरकारी संचालित तकनीकी संस्थानों को लाभ होने की उम्मीद है। इस विशाल उपक्रम का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना और छात्रों को उनके भविष्य के करियर के लिए आवश्यक कौशल के साथ सशक्त बनाना है।

उन्नत पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को सशक्त बनाना

परियोजना के हिस्से के रूप में, छात्रों को उन्नत पाठ्यक्रम तक पहुंच प्राप्त होगी जिसमें संचार और जलवायु लचीलेपन में उभरती प्रौद्योगिकियों को शामिल किया जाएगा। यह दूरदर्शी दृष्टिकोण छात्रों को तेजी से गतिशील और तेजी से विकसित हो रही दुनिया में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक ज्ञान और दक्षताओं से लैस करेगा।

उन्नत इंटर्नशिप और प्लेसमेंट सेवाएँ

परियोजना में भाग लेने वाले छात्रों को बेहतर इंटर्नशिप और प्लेसमेंट सेवाओं का भी आनंद मिलेगा। इसमें पेशेवर संघों के साथ नेटवर्क बनाने, कनेक्शन को बढ़ावा देने और आशाजनक कैरियर पथों के द्वार खोलने के अमूल्य अवसर शामिल हैं। इस तरह का व्यावहारिक प्रदर्शन सैद्धांतिक ज्ञान और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग के बीच अंतर को पाटने में सहायक है।

तकनीकी शिक्षा को सशक्त बनाने में विश्व बैंक की भूमिका

विश्व बैंक, एक प्रतिष्ठित बहुपक्षीय संस्था, ने इस ऋण को संभव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका समर्थन तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने और भारतीय छात्रों के लिए करियर की संभावनाओं का विस्तार करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आईबीआरडी द्वारा दिया गया ऋण 14 वर्षों के बाद अपनी पूर्ण अवधि तक पहुंच जाएगा, जिसके दौरान पांच वर्षों की छूट अवधि होगी।

तृतीयक शिक्षा में अंतराल को संबोधित करना

हाल के अध्ययनों ने भारत में तृतीयक शिक्षा के छात्रों के बीच तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों कौशल में महत्वपूर्ण अंतर को उजागर किया है। इनमें तर्क, पारस्परिक संचार और संघर्ष समाधान शामिल हैं। तकनीकी शिक्षा परियोजना में बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान सुधार इन चुनौतियों को स्वीकार करता है और उनका प्रभावी ढंग से समाधान करने का लक्ष्य रखता है।

लैंगिक समानता और समावेशन को बढ़ावा देना

यह परियोजना तकनीकी शिक्षा में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने पर भी जोर देती है। आउटरीच कार्यक्रम भावी महिला छात्रों, माता-पिता और अभिभावकों को तकनीकी शिक्षा कार्यक्रम विकल्पों पर बेहतर जानकारी प्रदान करेंगे। संवेदीकरण प्रयास गलतफहमियों को दूर करेंगे और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) क्षेत्रों में महिला भागीदारी को प्रोत्साहित करेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की ओर एक कदम

यह परियोजना भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप है, जो शिक्षा क्षेत्र के आधुनिकीकरण पर जोर देती है। छात्रों को प्रासंगिक कौशल से लैस करके और उन्हें उभरते नौकरी के अवसरों के लिए तैयार करके, परियोजना शैक्षिक उन्नति के लिए राष्ट्र के दृष्टिकोण का समर्थन करती है।

2023 आईएमडी विश्व प्रतिस्पर्धात्मकता रैंकिंग

नवीनतम विश्व प्रतिस्पर्धात्मकता रैंकिंग ने देशों के प्रतिस्पर्धी परिदृश्य में दिलचस्प अंतर्दृष्टि सामने ला दी है। इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मैनेजमेंट डेवलपमेंट (आईएमडी) द्वारा संकलित रैंकिंग, आर्थिक प्रदर्शन, सरकारी दक्षता, बुनियादी ढांचे और बहुत कुछ पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती है।

बहुप्रतीक्षित रैंकिंग में, डेनमार्क प्रतिस्पर्धात्मकता के मामले में शीर्ष स्थान वाले देश के रूप में उभरा। यह उपलब्धि सभी चार कारकों में देश की लगातार उत्कृष्टता को दर्शाती है: आर्थिक प्रदर्शन, सरकारी दक्षता, बुनियादी ढांचा और व्यावसायिक दक्षता।

सिंगापुर की स्थिति

सिंगापुर, जो अपने जीवंत कारोबारी माहौल के लिए जाना जाता है, ने वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता रैंकिंग में प्रभावशाली चौथे स्थान का दावा किया। जबकि शहर-राज्य पिछले वर्ष तीसरे स्थान से फिसल गया, इसकी समग्र प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मजबूत और उल्लेखनीय बनी हुई है।

आयरलैंड की उल्लेखनीय प्रगति

रैंकिंग में आयरलैंड ने महत्वपूर्ण प्रगति की और सबसे उल्लेखनीय सुधार वाले देश के रूप में उभरा। 11वें स्थान से दूसरे स्थान पर चढ़ते हुए, आयरलैंड ने उत्कृष्ट आर्थिक प्रदर्शन का प्रदर्शन किया क्योंकि इस मानदंड में उसकी रैंकिंग सातवें से पहले स्थान पर पहुंच गई। आयरलैंड की उन्नति में कई कारकों ने योगदान दिया, जिनमें कुशल कार्यबल, उच्च शैक्षिक मानक, नीति स्थिरता, प्रतिस्पर्धी कर व्यवस्था और व्यापार-अनुकूल वातावरण शामिल हैं।

कारकों पर विचार किया गया

आईएमडी की प्रतिस्पर्धात्मकता रैंकिंग चार प्रमुख कारकों के आधार पर देशों का मूल्यांकन करती है: आर्थिक प्रदर्शन, सरकारी दक्षता, बुनियादी ढांचा और व्यावसायिक दक्षता। ये कारक किसी देश की समग्र प्रतिस्पर्धात्मकता का व्यापक मूल्यांकन प्रदान करते हैं, जो इसके आर्थिक परिदृश्य को आकार देने वाले विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हैं।

कठिन डेटा और सर्वेक्षण प्रतिक्रियाएँ

रैंकिंग प्रक्रिया व्यापक परिणाम प्राप्त करने के लिए कठिन डेटा और सर्वेक्षण प्रतिक्रियाओं को जोड़ती है। समग्र रैंकिंग परिणामों का दो-तिहाई हिस्सा कठिन डेटा पर आधारित है, जिसमें व्यापक शोध और कई स्रोतों से प्राप्त 164 प्रतिस्पर्धात्मकता मानदंड शामिल हैं। शेष एक-तिहाई वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिए गए 92 सर्वेक्षण प्रश्नों के उत्तरों से प्राप्त हुआ है, जो उद्योग के नेताओं से मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

स्विट्ज़रलैंड की सरकारी दक्षता और बुनियादी ढाँचा

स्विट्जरलैंड ने सरकारी दक्षता और बुनियादी ढांचे में अग्रणी के रूप में अपना स्थान बरकरार रखा है। यह उपलब्धि देश के मजबूत शासन और अच्छी तरह से विकसित बुनियादी ढांचे को दर्शाती है, जो इसकी समग्र प्रतिस्पर्धात्मकता में योगदान करती है। स्विट्ज़रलैंड सरकारी दक्षता और बुनियादी ढांचे में पहले स्थान पर, व्यावसायिक दक्षता में सातवें स्थान पर रहा, और आर्थिक प्रदर्शन में सुधार देखा गया, जो 30वें से 18वें स्थान पर आ गया।

भारत-मिस्र रणनीतिक साझेदारी

भारत और मिस्र ने रणनीतिक साझेदारी समझौते के माध्यम से अपने द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की मिस्र यात्रा के दौरान, कई महत्वपूर्ण घटनाक्रम सामने आए, जिससे दोनों देशों के बीच संबंध मजबूत हुए।

भारत और मिस्र के बीच रणनीतिक साझेदारी समझौते का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करना है। इसका प्राथमिक उद्देश्य दोनों देशों के बीच मौजूदा संबंधों को बढ़ाना और कई मोर्चों पर घनिष्ठ संबंधों को बढ़ावा देना है।

मुख्य अतिथि भ्रमण

मिस्र के राष्ट्रपति अल-सिसी ने जनवरी में गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भारत का दौरा किया। इस यात्रा ने रणनीतिक साझेदारी समझौते की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने द्विपक्षीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण क्षण चिह्नित किया और भविष्य के सहयोग के लिए आधार तैयार किया।

रणनीतिक साझेदारी के चार तत्व

रणनीतिक साझेदारी समझौते में चार प्रमुख तत्व शामिल हैं। इनमें राजनीतिक, रक्षा और सुरक्षा सहयोग, आर्थिक जुड़ाव, वैज्ञानिक और शैक्षणिक सहयोग और सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संपर्क शामिल हैं। यह व्यापक दृष्टिकोण समग्र और बहुआयामी साझेदारी सुनिश्चित करता है।

भारत और मिस्र ने तीन समझौतों पर हस्ताक्षर करके अपने सहयोग को मजबूत किया। ये समझौते कृषि, स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों के संरक्षण और प्रतिस्पर्धा कानून जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर केंद्रित हैं। इस तरह के समझौते आपसी सहयोग, ज्ञान के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाते हैं और रणनीतिक साझेदारी की नींव को और मजबूत करते हैं।

ऐतिहासिक स्थलों की खोज

प्रधान मंत्री मोदी की मिस्र यात्रा में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों का दौरा शामिल था। मुख्य आकर्षणों में से एक गीज़ा के प्रतिष्ठित महान पिरामिडों की उनकी खोज थी। गीज़ा के महान पिरामिडों में तीन मुख्य पिरामिड शामिल हैं: खुफ़ु (या चेप्स) का पिरामिड, खफ़्रे का पिरामिड, और मेनक्योर का पिरामिड। प्राचीन मिस्र के पुराने साम्राज्य काल के दौरान निर्मित, इन पिरामिडों का निर्माण फिरौन की कब्रों के रूप में किया गया था। रेगिस्तानी परिदृश्य पर ऊंचे, इन्हें सटीकता, सरलता और विशाल मानवीय प्रयास के साथ सावधानीपूर्वक डिजाइन और निर्मित किया गया था।

बोहरा समाज से मुलाकात

अल-हकीम मस्जिद की अपनी यात्रा के दौरान, प्रधान मंत्री मोदी को बोहरा समुदाय के सदस्यों से मिलने का अवसर मिला। यह समुदाय मस्जिद के संरक्षण और रखरखाव में सक्रिय रूप से योगदान देता है, जो भारत और मिस्र के बीच लोगों के बीच मजबूत संबंधों को दर्शाता है।

द्विपक्षीय संबंध बनाना

संयुक्त राज्य अमेरिका से काहिरा पहुंचने पर, प्रधान मंत्री मोदी ने मिस्र के प्रधान मंत्री मुस्तफा मैडबौली के नेतृत्व वाली भारत इकाई से मुलाकात की। राष्ट्रपति अल-सिसी के नेतृत्व में गठित वरिष्ठ अधिकारियों की यह सभा दोनों देशों के बीच आपसी संबंधों को बढ़ाने के लिए समर्पित है। इस तरह की पहल अधिक सहयोग और पारस्परिक विकास के लिए आधार तैयार करती हैं।

मधुमक्खी कालोनियों में उच्च मृत्यु दर

मैरीलैंड विश्वविद्यालय और ऑबर्न विश्वविद्यालय द्वारा किए गए वार्षिक मधुमक्खी सर्वेक्षण के अनुसार संयुक्त राज्य अमेरिका में मधुमक्खी कालोनियों को एक चिंताजनक प्रवृत्ति का सामना करना पड़ रहा है। जबकि मधुमक्खी कालोनियों की कुल संख्या स्थिर बनी हुई है, सर्वेक्षण से प्रबंधित कालोनियों में उच्च मृत्यु दर का पता चलता है।

सर्वेक्षण की रिपोर्ट है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रबंधित हनीबी कालोनियों में से लगभग आधे नष्ट हो गए हैं, जो रिकॉर्ड पर दूसरी सबसे बड़ी मृत्यु दर है। यह नुकसान चौंका देने वाला है, लेकिन यह तब और भी अधिक चिंताजनक है जब नट्स, सब्जियां, जामुन, खट्टे फल और खरबूजे सहित 100 से अधिक फसलों के परागण में मधुमक्खियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार किया जाता है।

योगदान देने वाले कारक

मधुमक्खी कालोनियों की उच्च मृत्यु दर में कई कारक योगदान करते हैं। वेरोआ डिस्ट्रक्टर माइट जैसे परजीवी मधुमक्खियों को कमजोर करते हैं और उन्हें वायरस के प्रति संवेदनशील बनाते हैं। कीटनाशक उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली और चारा खोजने की क्षमता से और भी समझौता करते हैं। निवास स्थान की हानि और विविध खाद्य स्रोतों की कमी के कारण होने वाली भुखमरी, समस्या को बढ़ा देती है। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाओं के प्रभाव इन नाजुक परागणकों के लिए अतिरिक्त चुनौतियाँ पैदा करते हैं।

मधुमक्खी पालकों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ

मधुमक्खी पालकों को मधुमक्खी कालोनियों की कुल आबादी को बनाए रखने के चुनौतीपूर्ण कार्य का सामना करना पड़ता है। वे छत्तों को विभाजित करने और पुनः भंडारित करने में महत्वपूर्ण संसाधनों का निवेश करते हैं, जिसमें नई रानियों और कालोनियों को ढूंढना या खरीदना शामिल है। वाणिज्यिक मधुमक्खी पालक नुकसान की भरपाई करने और मधुमक्खी कॉलोनी की आबादी की स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

संरक्षण प्रयासों का महत्व

मधुमक्खियों के खतरों से निपटने के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। हालाँकि वर्तमान स्थिति 15 साल पहले देखे गए संकट स्तर तक नहीं पहुँच सकती है, लेकिन पर्यावरणीय खतरे बरकरार हैं। मधुमक्खियाँ कीट-निर्भर पौधों के परागण और विविध पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं। व्यावसायिक मधुमक्खी कालोनियों से परागण की बढ़ती मांग के कारण उनकी आबादी की सुरक्षा और स्थायी समाधान खोजने के प्रयासों में वृद्धि की आवश्यकता है।

कोयला आधारित विद्युत संयंत्रों की अनुपालन स्थिति

भारत के कोयला आधारित बिजली संयंत्रों को फ़्लू गैस डी-सल्फराइजेशन (एफजीडी) सिस्टम स्थापित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो सल्फर डाइऑक्साइड उत्सर्जन को नियंत्रित करने और वायु प्रदूषण को कम करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) द्वारा किए गए एक हालिया विश्लेषण में एफजीडी सिस्टम की कम स्थापना दर और उत्सर्जन मानदंडों के अनुपालन के निहितार्थ पर प्रकाश डाला गया है।

सीएसई विश्लेषण के अनुसार, भारत के केवल 5% कोयला आधारित बिजली संयंत्रों में एफजीडी सिस्टम स्थापित हैं। यह दिसंबर 2015 में केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा निर्धारित उत्सर्जन नियंत्रण आवश्यकताओं को पूरा करने में एक महत्वपूर्ण अंतर को इंगित करता है।

देरी और चुनौतियाँ

रिपोर्ट FGD स्थापना में धीमी प्रगति के लिए कई कारणों की पहचान करती है। FGD घटकों के लिए बाहरी बाज़ार पर निर्भरता, भारतीय बाज़ार में प्रौद्योगिकी की नवीनता और COVID-19 महामारी के प्रभाव ने कार्यान्वयन में देरी में योगदान दिया है।

उत्सर्जन मानदंडों का अनुपालन

विश्लेषण से पता चलता है कि दिल्ली-एनसीआर और 1 मिलियन या अधिक आबादी वाले शहरों (43%), गंभीर रूप से प्रदूषित क्षेत्रों (11%) और शेष क्षमता (1%) के पास क्षमता का एक बड़ा प्रतिशत उत्सर्जन को पूरा करने की संभावना नहीं है। नवीनतम समय सीमा के अनुसार मानदंड। इससे इन क्षेत्रों में संभावित वायु प्रदूषण प्रभाव के बारे में चिंताएं पैदा होती हैं।

समय और निवेश आवश्यक

एफजीडी सिस्टम स्थापित करना एक समय लेने वाली प्रक्रिया है, जिसमें आमतौर पर लगभग दो साल लगते हैं। सीएसई रिपोर्ट उनके अनुपालन चरण और समय सीमा तक शेष समय के आधार पर बिजली संयंत्रों द्वारा उत्सर्जन मानदंडों को पूरा करने की संभावना का अनुमान लगाती है। समय पर अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

उत्सर्जन नियंत्रण का महत्व

सीएसई रिपोर्ट उत्सर्जन मानदंडों के अनुपालन की आवश्यकता पर जोर देती है और इस बात पर प्रकाश डालती है कि बिजली संयंत्र उत्सर्जन उनकी सीमाओं से परे वायु प्रदूषण में योगदान कर सकता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण पर वायु प्रदूषण के प्रभाव के लिए प्रभावी प्रदूषण नियंत्रण उपायों की आवश्यकता है।

प्रदूषकों को भुगतान कैसे करें: वैश्विक इक्विटी का समर्थन करने के लिए जलवायु वित्त

नई वैश्विक वित्तीय संधि के लिए शिखर सम्मेलन हाल ही में पेरिस में हुआ, जिसमें देश के नेता, वित्त मंत्री और नागरिक समाज संगठन एक साथ आए। "प्रदूषक भुगतान सिद्धांत" पर चर्चा के लिए एक अतिरिक्त कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

प्रदूषकों को भुगतान करना: "प्रदूषक भुगतान करता है" सिद्धांत की खोज

शिखर सम्मेलन के दौरान आयोजित एक अतिरिक्त कार्यक्रम का शीर्षक था "प्रदूषकों को भुगतान कैसे करें: वैश्विक इक्विटी का समर्थन करने के लिए जलवायु वित्त।" इस सत्र में "प्रदूषक भुगतान सिद्धांत" की अवधारणा पर चर्चा की गई। यह सिद्धांत इस बात पर जोर देता है कि जो लोग प्रदूषण में योगदान करते हैं, उन्हें अपने कार्यों से होने वाले पर्यावरणीय नुकसान के प्रबंधन की जिम्मेदारी उठानी चाहिए और इससे प्रभावित लोगों को मुआवजा देना चाहिए। ग्रीनहाउस गैसें, जिन्हें जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के विभिन्न रूपों में उनके योगदान के कारण प्रदूषक माना जाता है, चर्चा का मुख्य केंद्र बिंदु थीं।

जलवायु वित्त आवश्यकता का अनुमान लगाना

शिखर सम्मेलन के दौरान महत्वपूर्ण जलवायु वित्त की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। यह अनुमान लगाया गया था कि विकासशील देशों में टिकाऊ प्रथाओं की दिशा में सुचारु परिवर्तन की सुविधा के लिए 2030 तक 2.4 ट्रिलियन डॉलर का वार्षिक निवेश आवश्यक होगा। यह व्यापक वित्तीय आवश्यकता पर्याप्त जलवायु वित्त की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सरकार और बहुपक्षीय विकास बैंक के योगदान से परे नई राजस्व धाराओं का पता लगाने की तात्कालिकता पर जोर देती है।

संभावित राजस्व धाराओं की खोज

शिखर सम्मेलन के दौरान जलवायु वित्त के संभावित स्रोतों के रूप में विभिन्न राजस्व धाराओं पर चर्चा की गई। इनमें शिपिंग शुल्क, वित्तीय लेनदेन कर, जीवाश्म ईंधन कर, तेल, गैस और कोयले के निर्यात पर शुल्क और एयरलाइन शुल्क शामिल हैं। इन राजस्व-सृजन तंत्रों में पर्याप्त धनराशि उत्पन्न करने की क्षमता है जिसे जलवायु-संबंधित पहलों के लिए आवंटित किया जा सकता है और हरित अर्थव्यवस्थाओं में परिवर्तन का समर्थन किया जा सकता है।

शिपिंग उद्योग की भूमिका और प्रस्तावित लेवी

वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में 2.9% के योगदान को देखते हुए, शिपिंग उद्योग चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय था। इस मुद्दे को हल करने के लिए, एक प्रस्तावित समाधान उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड पर प्रति टन 100 डॉलर की शिपिंग लेवी का कार्यान्वयन था।

इस लेवी का उद्देश्य उद्योग के भीतर उत्सर्जन में कटौती को प्रोत्साहित करना और महत्वपूर्ण धन उत्पन्न करना है जिसका उपयोग जलवायु पहलों का समर्थन करने के लिए किया जा सकता है।

विश्व औषधि रिपोर्ट 2023

हाल ही में जारी संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट ने दुनिया भर में नशीली दवाओं के उपयोग से उत्पन्न बढ़ती चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। वर्ल्ड ड्रग रिपोर्ट 2023 शीर्षक वाली रिपोर्ट चिंताजनक आंकड़े प्रदान करती है और सार्वजनिक स्वास्थ्य, रोकथाम और उपचार सेवाओं तक पहुंच को प्राथमिकता देने की तत्काल आवश्यकता पर जोर देती है।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में नशीली दवाओं का इंजेक्शन लगाने वाले लोगों की संख्या आश्चर्यजनक रूप से 13.2 मिलियन है, जो पिछले अनुमान की तुलना में 18% की वृद्धि दर्शाती है। यह तेज वृद्धि नशीली दवाओं की लत की निरंतर प्रकृति और प्रभावी हस्तक्षेप और सहायता प्रणालियों की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती है।

व्यापक नशीली दवाओं का उपयोग

वैश्विक स्तर पर, 2021 में 296 मिलियन से अधिक लोगों द्वारा नशीली दवाओं का उपयोग करने की सूचना मिली है, जो पिछले दशक में 23% की चिंताजनक वृद्धि को दर्शाता है। ये संख्याएँ चुनौती के पैमाने और नशीली दवाओं के उपयोग और इससे जुड़े नुकसानों को संबोधित करने के लिए व्यापक रणनीतियों की आवश्यकता को दर्शाती हैं।

नशीली दवाओं के उपयोग विकारों का बढ़ता बोझ

रिपोर्ट के सबसे चिंताजनक निष्कर्षों में से एक नशीली दवाओं के उपयोग संबंधी विकारों से पीड़ित लोगों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि है। पिछले 10 वर्षों में, नशीली दवाओं के उपयोग से संबंधित विकारों का अनुभव करने वाले व्यक्तियों में 45% की वृद्धि हुई है, जो आश्चर्यजनक रूप से 39.5 मिलियन तक पहुंच गई है। यह उछाल नशे की लत से जूझ रहे लोगों के लिए उपचार सेवाओं तक पहुंच और प्रभावी समर्थन के महत्वपूर्ण महत्व को रेखांकित करता है।

उपचार अंतराल और असमानताएँ

नशीली दवाओं के उपयोग संबंधी विकारों के बढ़ते बोझ के बावजूद, रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि नशीली दवाओं के उपयोग संबंधी विकारों वाले 20% से भी कम लोग वर्तमान में उपचार में हैं। यह महत्वपूर्ण उपचार अंतर सहायता सेवाओं की पहुंच और उपलब्धता के बारे में चिंता पैदा करता है। इसके अलावा, रिपोर्ट से पता चलता है कि एम्फ़ैटेमिन-प्रकार के उत्तेजक पदार्थों का उपयोग करने वाली केवल 27% महिलाओं को उपचार मिलता है, जो देखभाल तक पहुँचने में लैंगिक असमानताओं का संकेत देता है।

एक कमज़ोर आबादी के रूप में युवा

रिपोर्ट इस बात पर जोर देती है कि विभिन्न क्षेत्रों में युवा आबादी विशेष रूप से नशीली दवाओं के उपयोग और मादक द्रव्यों के सेवन संबंधी विकारों के प्रति संवेदनशील है। उदाहरण के लिए, अफ्रीका में, नशीली दवाओं के उपयोग के इलाज में 70% लोग 35 वर्ष से कम उम्र के हैं। ये निष्कर्ष युवा लोगों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लक्षित रोकथाम कार्यक्रमों, शिक्षा और प्रारंभिक हस्तक्षेप पहल की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं।

नशीली दवाओं की चुनौतियों का समाधान: एक वैश्विक प्राथमिकता

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट नशीली दवाओं की चुनौतियों पर व्यापक प्रतिक्रिया के हिस्से के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य, रोकथाम और उपचार सेवाओं तक पहुंच को प्राथमिकता देने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित करती है। इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि इन चुनौतियों का समाधान करने में विफलता के परिणामस्वरूप अधिक लोग पीछे रह जाएंगे, सामाजिक और आर्थिक असमानताएं बढ़ेंगी और वैश्विक संकटों और संघर्षों में योगदान मिलेगा।

देश में नवीकरणीय एच-1बी वीजा

संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकारियों ने हाल ही में एच-1बी वीजा नवीनीकरण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण विकास की घोषणा की है। 'इन-कंट्री' नवीकरणीय एच-1बी वीजा की शुरूआत का उद्देश्य अमेरिका में काम करने वाले भारतीय पेशेवरों के लिए नवीकरण प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करना है।

एच-1बी वीजा अत्यधिक मांग वाले गैर-आप्रवासी वीजा हैं जो अमेरिकी कंपनियों को सैद्धांतिक या तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता वाले विशेष व्यवसायों में विदेशी श्रमिकों को नियुक्त करने की अनुमति देते हैं। ये वीज़ा प्रतिभा की भर्ती को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विशेष रूप से प्रौद्योगिकी क्षेत्र में, जिसमें कई कर्मचारी भारत जैसे देशों से आते हैं।

2004 तक, एच-1बी वीज़ा सहित कुछ गैर-आप्रवासी वीज़ा को अमेरिका के भीतर नवीनीकृत किया जा सकता था या मुहर लगाई जा सकती थी। हालाँकि, बाद के बदलावों के कारण विदेशी तकनीकी कर्मचारियों को देश छोड़ना पड़ा, जो अक्सर अपने पासपोर्ट पर एच-1बी वीज़ा विस्तार टिकटों के लिए अपने घरेलू देशों में लौट जाते थे। इस आवश्यकता ने महत्वपूर्ण असुविधाएँ उत्पन्न कीं, विशेष रूप से वीज़ा नवीनीकरण के लिए लंबे प्रतीक्षा समय को ध्यान में रखते हुए, जो 800 दिन या दो साल से अधिक हो सकता है।

'इन-कंट्री' नवीनीकरण का परिचय

भारतीय पेशेवरों के सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए, अमेरिकी वीज़ा कार्यालय ने 'इन-कंट्री' नवीकरणीय एच-1बी वीज़ा पेश किया है। यह पहल व्यक्तियों को वीज़ा नवीनीकरण के लिए विदेश यात्रा करने की आवश्यकता को समाप्त करती है। इस घोषणा का समय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति जो बिडेन के बीच आगामी द्विपक्षीय बैठक के साथ मेल खाता है, जो भारत-अमेरिका संबंधों के महत्व को रेखांकित करता है।

सुविधा और सहयोग का विस्तार

'इन-कंट्री' नवीनीकरण कार्यक्रम एक लोगों से लोगों की पहल है जिसका उद्देश्य आसान वीज़ा नवीनीकरण प्रक्रियाओं को बढ़ावा देना है। बिडेन प्रशासन ने भारतीय नागरिकों सहित कुछ कार्य वीजा के घरेलू नवीनीकरण पर निर्णय लेने के लिए एक पायलट कार्यक्रम की योजना का भी अनावरण किया है। इरादा अंततः एच-1 और एल वीज़ा धारकों के व्यापक पूल को कवर करने के लिए इस कार्यक्रम का विस्तार करना है, जिससे विदेशी श्रमिकों के लिए सुविधा और सहयोग बढ़ाया जा सके।

Google की 'परिप्रेक्ष्य' खोज

Google ने हाल ही में Perspectives नामक एक नई खोज सुविधा लॉन्च की है, जिसका लक्ष्य उपयोगकर्ताओं को विभिन्न विषयों पर व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करना है।

Google पर परिप्रेक्ष्य खोज में सामग्री प्रकारों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें लंबे और छोटे प्रारूप वाले वीडियो, चित्र और लिखित पोस्ट शामिल हैं। ये सामग्रियां चर्चा बोर्डों, प्रश्नोत्तरी साइटों और लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफार्मों से प्राप्त की जाती हैं। Google के ब्लॉग पोस्ट में टिकटॉक वीडियो, यूट्यूब वीडियो, वेबसाइट, ट्वीट, Quora परिणाम और Reddit पोस्ट जैसे कुछ उदाहरणों पर प्रकाश डाला गया है।

अधिकारिता और विश्वसनीयता पर जोर देना

परिप्रेक्ष्य खोज का एक मुख्य फोकस ऐसी सामग्री को प्राथमिकता देना है जो आधिकारिकता, विशेषज्ञता और भरोसेमंदता प्रदर्शित करती है। Google का लक्ष्य उपयोगकर्ताओं को विश्वसनीय स्रोतों से विश्वसनीय और सूचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करना है। इन विशेषताओं को उजागर करके, कंपनी यह सुनिश्चित करने का प्रयास करती है कि उपयोगकर्ता उन्हें मिलने वाली जानकारी पर भरोसा कर सकें।

दृश्य अपील के लिए Pinterest जैसा लेआउट

पर्सपेक्टिव खोज परिणामों का लेआउट Pinterest की दृश्यात्मक आकर्षक शैली जैसा दिखता है। यह दृष्टिकोण उपयोगकर्ताओं को उनकी खोज क्वेरी पर विभिन्न दृष्टिकोणों का पता लगाने का एक अनूठा और आकर्षक तरीका प्रदान करता है।

संतुलित सूचना खोज को प्रोत्साहित करना

पर्सपेक्टिव को पेश करने के पीछे Google की प्रेरणा उपयोगकर्ताओं को अपनी खोजों में केवल "रेडिट" जोड़ने पर भरोसा करने से हतोत्साहित करना है। इस सुविधा का उद्देश्य वास्तविक लोगों और विविध स्रोतों से जानकारी प्रदान करना है, जिससे जानकारी प्राप्त करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया जा सके।

चुनौतियों और समय को संबोधित करना

खोजों में "रेडिट" का उपयोग करने की प्रभावशीलता में कमी रेडिट समुदायों द्वारा नियोजित एपीआई परिवर्तनों के विरोध में ऑफ़लाइन होने के कारण हुई थी। आलोचकों ने अनुमान लगाया है कि Google के परिप्रेक्ष्य को Reddit के क्षेत्र पर अतिक्रमण करने के प्रयास के रूप में देखा जा सकता है, लेकिन यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि फीचर के लॉन्च के समय की घोषणा मई में एक Google सम्मेलन के दौरान की गई थी, यह सुझाव देते हुए कि परिचय संयोग हो सकता है।

व्यापक रूप से अपनाने के लिए क्रमिक रोलआउट

एक सहज अनुभव सुनिश्चित करने के लिए, Google ने कई हफ्तों के दौरान धीरे-धीरे पर्सपेक्टिव टैब को रोल आउट करने का विकल्प चुना है। यह उपयोगकर्ताओं को नई सुविधा से परिचित होने और धीरे-धीरे इसके द्वारा प्रदान किए जाने वाले विविध दृष्टिकोणों का पता लगाने की अनुमति देता है।